

अश्वगंधा हितधारकों की बैठक : भारत में कोविड-19 महामारी के मददेनजर अवसर और चुनौतियां

दिनांक: 20 मई, 2020 (बुधवार)

समय: सुबह 11.00 बजे से

स्थान: जूम वीडियो सम्मेलन।

औषधीय पौधों का उपयोग प्राचीन काल से औषधियों के लिए किया जाता रहा है। पौध आधारित दवाएं, एक बार गुमनामी में खो जाने के बाद पुनः मानव जाति के स्वास्थ्य प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण स्थान पर आ गईं। वे स्वास्थ्य, भोजन, पोषण, आर्थिक और कृषि-पारिस्थितिक प्रतिभूतियों को मजबूत बनाने के अवसरों की नई खिड़कियां प्रदान करते हैं। भारत औषधीय और संगंधीय पौधों के मूल्यवान आनुवांशिक संसाधनों का एक समृद्ध भंडार है, क्योंकि यह फाइटोजियोग्राफिक और एगोक्लाईमैटिक ज़ोन के व्यापक स्पेक्ट्रम और लोककथाओं की विरासत और मौलिक ज्ञान की समृद्ध संस्कृति के साथ संपन्न है। स्वास्थ्य देखभाल में इस ज्ञान का उपयोग करने से चिकित्सा की आयुर्वेद, यूनानी और सिद्धा प्रणालियों के विभिन्न प्रकार के सूत्रीकरण में बड़ी संख्या में पौध प्रजातियों का उपयोग हुआ है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, हर्बल दवाओं के बिना 'सभी के लिए स्वास्थ्य' का लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता है। जबकि विकासशील देशों में हर्बल दवाओं की मांग बढ़ रही है। ऐसे संकेत हैं कि विकसित देशों में उपभोक्ताओं का आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं से मोहभंग हो रहे हैं और पारंपरिक दवाओं में विकल्प तलाश रहे हैं। हर्बल दवाओं की बढ़ती मांग ने जैव-पूर्वक्षण में बहुराष्ट्रीय दवा उद्योग के हित को नवीनीकृत किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, हर्बल उत्पादों का अंतर्राष्ट्रीय बाजार लगभग \$ 6.2 बिलियन है, जो वर्ष 2050 तक \$ 5 ट्रिलियन तक बढ़ने की ओर अग्रसर है।

हर्बल पौधों में, अश्वगंधा (विथानिया सोम्निफेरा एल. डुनल) एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है, जिसका उपयोग आयुर्वेद, सिद्धा, यूनानी, होम्योपैथी और अन्य की विभिन्न पारंपरिक प्रणालियों में व्यापक रूप से किया जाता है। अश्वगंधा सोलेनेसी परिवार का एक सदाबहार, बारहमासी झाड़ीनुमा पादप है। इसका उदगम स्थल भारतीय उप-महाद्वीप है, इसे 'भारतीय जिनसेंग' के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि जड़ों की तुलना चीनी जिनसेंग (पैनेक्स जिनसेंग) की जड़ों के साथ उनके पुनर्स्थापनात्मक गुणों के लिए की जाती है। अश्वगंधा एक

बहुउद्देशीय औषधीय पौधा है, जो जड़ों और पत्तियों में बायोएक्टिव माध्यमिक चयापचयों के बड़े सरणी को संश्लेषित करता है। जड़ के औषधीय गुणों को अल्कलॉइड्स (आइसोपेललेटेरिन, एनाफेरिन), स्टेरॉइडल लैक्टोन (विथेनॉलाइड्स, विथफेरिन) और सैपोनिन युक्त एक अतिरिक्त एसाइल समूह (साइटोइंडोसाइड VII और VIII) है, जो जड़ों और पत्तियों में मौजूद होते हैं। इसमें महत्वपूर्ण हेपेटोप्रोटेक्टिव, इम्यूनोमॉड्यूलेटरी, कैंसर विरोधी गुण, एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटीट्यूमर, एंटी-स्ट्रेस, एंटी-ऑक्सीडेंट, माइंड-बूस्टिंग और कायाकल्प गुण हैं। इससे शारीरिक शक्ति बढ़ जाती है और तनाव से संबंधित विकारों जैसे गठिया, उच्च रक्तचाप, मधुमेह और समय से पहले बूढ़ा होने से बचाता है। फार्मास्यूटिकल, कॉस्मेटिक, कृषि और खाद्य उद्योगों में इसके व्यापक अनुप्रयोग के कारण, इसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अपनी मांग को पूरा करने के लिए भारत में कई शताब्दियों पहले खेती के तहत लाया गया था। अश्वगंधा की वार्षिक मांग 7000 टन है, लेकिन इसका वास्तविक उत्पादन 1500 टन प्रति वर्ष ही है। जड़ों का पाउडर, अर्क, गोलियां और मिश्रित चाय अश्वगंधा की खपत के लोकप्रिय रूप हैं।

अश्वगंधा में किए गए अनुसंधान और विकास गतिविधियों के परिणामस्वरूप आईसीएआर-डीएमएपीआर, एआईसीआरपी-कार्यक्रम, सीएसआईआर-सीआईएमएपी और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा फसल के बाद के संचालन और प्रौद्योगिकियों, किस्में रिलीज हुई हैं।

वर्तमान में कोविड-19 स्थिति ने लोगों की प्रतिरक्षा स्थिति को बढ़ावा देने के लिए औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने हेतु सरकार का ध्यान आकर्षित किया है। अश्वगंधा एक प्रतिरक्षा वृद्धि कारक है, जिसकी भारतीय चिकित्सा पद्धति में मांग हो रही है। वर्तमान में इसकी मांग घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दोनों में बढ़ते स्तर पर है। इसलिए, अश्वगंधा की खेती को बढ़ावा देना आवश्यक है ताकि भारतीय चिकित्सा पद्धति के लिए इसकी उपलब्धता बढ़ सके और अंतर्राष्ट्रीय मांग को पूरा किया जा सके।

इस पृष्ठभूमि के साथ हितधारकों की बैठक तैयार की जाती है

1. अनुसंधान और विकास, मूल्य संवर्धन और विपणन में वर्तमान स्थिति का जायजा लेने के लिए।
2. भारत में अश्वगंधा की खेती के लिए उपलब्ध अवसरों का दोहन करने के लिए।
3. वे चुनौतियां, जिनका सामना किया जाना है।
4. संभव अवसरों का पता लगाने के लिए।

कार्यक्रम सूची

	प्रतिभागी जूम में लॉग इन करें	10:50 पूर्वाह्न
	स्वागत, डॉ. एस. रॉय निदेशक, आईसीएआर-डीएमएपीआर	11:00 पूर्वाह्न
	डॉ. पी. मणिवेल द्वारा आईसीएआर-डीएमएपीआर में अश्वगंधा अनुसंधान की स्थिति	11:10 पूर्वाह्न
	द्वारा टिप्पणी: डॉ. ए. के. सिंह, डीडीजी (बागवानी विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली डॉ. जे. एल. एन. शास्त्री सीईओ, एनएमपीबी, नई दिल्ली डॉ.टी . जानकीराम एडीजी (होर्ट साइंस।), आईसीएआर, नई दिल्ली डॉ.के .पी . त्रिवेदी निदेशक, सीएसआईआर-सीआईएमएपी, लखनऊ	11:20 पूर्वाह्न
	चर्चा (सभी प्रतिभागी)	12.00 मध्याह्न
	धन्यवाद प्रस्ताव (डॉ. पी. मणिवेल)	12.30 अपराह्न

स्रोत कृषि ज्ञान :प्रबंधन इकाई भाकृअनुप-औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद, गुजरात ।